बी०एड० प्रथम वर्ष सत्र-2019-21

7A - हिन्दी शिक्षण (Pedagogy of Hindi)

*गद्य शिक्षण ⇒ * अर्थ, प्रकार, उद्देश्य

* गद्य - शिक्षण

गद्य शब्द संस्कृत भाषा की 'गद्' धातु से बना है जिसका अर्थ होता है- स्पष्ट कहना। साहित्य-दर्पण के अनुसार 'वृत्त बंधोज्झित गद्यजो' अर्थात 'वृत्त-बन्ध-हीन रचना गद्य है। काव्यदर्श के अनुसार 'अपाद: पदसंतानो गद्यजे' अर्थात पद समुदाय में गण-मात्र आदि के निपट पाद का न होना गद्य है। अंग्रेजी में गद्य को प्रोज कहते है। प्रोज की परिभाषा यों की गई है-'स्टेट, डाइरेक्ट अनस्डार्न्ड स्पीच' अथवा लैंग्वेज स्पोकेन ऑफ रिटन, ऐज इन आर्डिनरी यूसेज, विदाउट मीटर ऑफ राइम'। अरबी में गद्य को नस्र या 'इबारत' या 'नज्म का उल्टा' कहा गया है। उर्दू में भी अरबी के अनुसार ही गद्य को स्पष्ट किया गया है।

साहित्य की विभिन्न विधाओं में गद्य का स्थान महत्वपूर्ण है। गद्य रचना में लेखक स्वतन्त्र रहता है। स्वतन्त्र होने के नाते उसे बहुत सावधान भी रहना पड़ता है। काव्य में भाषा-सम्बन्धी भूल को यह मानकर स्वीकार कर लिया जाता है कि 'लय एवं भाव की दृष्टि से व्याकरण पर कवि का ध्यान नहीं गया, किन्तु गद्य में लेखक को व्याकरणीय त्रुटि के लिए क्षमा नहीं किया जाता है और उसे उसका दोष घोषित कर दिया जाता है। 'गद्य कवीना निकषं वदन्ति' उक्ति के अनुसार गद्य को कवियों की कसौटी कहा गया है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

* गद्य शिक्षण के उद्देश्य

भाषा शिक्षण के उद्देश्यों में एक प्रमुख उद्देश्य यह है कि छात्रों की विचार-शक्ति में वृद्धि हो और अपने विचारों को प्रभावी ढंग से व्यक्त कर सके तथा विभिन्न साहित्यकारों द्वारा व्यक्त विचारों को सरलता से ग्रहण कर सकें। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए गद्य-शिक्षण प्रभावी साधन है।

गद्य-शिक्षण का अपना विशेष महत्व है। इस महत्व को ध्यान में रखकर गद्य पाठों का शिक्षण किया जाता है। गद्य-शिक्षण के उद्देश्य निम्नलिखित है —

(1) छात्रों के शब्द-भण्डार और सूक्ति भण्डार में क्रमशः वृद्धि करना।

(2) छात्रों के वर्णों, शब्दों तथा वाक्यों के उच्चारण में शुद्धता उत्पन्न करना।

(3) चिन्तन में क्रमशः स्पष्टता, संगतता एवं क्रमबद्धता उत्पन्न करना।

(4) छात्रों के विचारों तथा शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों, सूक्तियों एवं कथाओं के कोष का क्रमशः विस्तार करना।

(5) छात्रों को सुन्दर गद्यात्मक उद्धरणों के संकलन की प्रेरणा देना।

(6) छात्रों के हृदय में भाषा-विषयक शुद्धता के प्रति गम्भीर सावधानी का भाव उत्पन्न करना।

(7) छात्रों में ज्ञान-क्षेत्र एवं विवेक के विकास द्वारा चरित्र-चित्रण करना।

(8) विभिन्न लेखन-शैलियों का परिचय कराके लेखन-शैली के विकास में उनकी सहायता करना।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि गद्य-शिक्षण के माध्यम से छात्रों के शब्द व सूक्ष्मि भण्डार में वृद्धि करना, उचित आरोह-अवरोह के साथ वाचन करने की योग्यता उत्पन्न करना, छात्रों की विचार-शक्ति में वृद्धि करना एवं विभिन्न लेखन-शैलियों से परिचित करना, गद्य-शिक्षण के उल्लेखनीय सामान्य उद्देश्य है।

सामान्य उद्देश्यों के अतिरिक्त कुछ विशिष्ट उद्देश्य भी होते है। विद्यालय में जो भिन्न-गद्य-पाठ पढ़ाये जाते है उनमें कुछ विचारात्मक होते है तो कुछ सूचनात्मक, कुछ वर्णनात्मक कुछ भावात्मक, कुछ कथात्मक तथा कुछ चरित्र-निर्माणात्मक होते है। कुछ पाठ व्यावहारिक ज्ञान पर आधारित होते है। कुछ अन्य पाठ वैज्ञानिक, भौगोलिक अथवा ऐतिहासिक विषयों पर आधारित होते है। इन पाठों के अपने विशिष्ट उद्देश्य होते है। इस प्रकार प्रत्येक पाठ का मुख्य विशिष्ट उद्देश्य गद्य-पाठ में ही निहित होता है।

* गद्य पाठ के प्रकार

गद्य-शिक्षण का कार्य करते समय अध्यापक के समक्ष कुछ कठिनाइयाँ स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। सामान्य-सी सूझबूझ से शिक्षण रुचिकर बन जाता है और छात्र आसानी से विषय को आत्मसात करने लगते है। किन्तु यह सब तभी सम्भव हो पाता है जबकि अध्यापक अपने विषय के शिक्षण की कठिनाइयों का ज्ञान कर लेता है। वे कठिनाइयाँ क्या है? यह विचारणीय प्रश्न है। इसके लिए शिक्षण की दृष्टि से अध्यापक द्वारा गहन अध्ययन तथा मूल वाचन पाठ का विभाजन कर लिया जाता है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

गद्य-पाठ दो प्रकार के होते है —

① गहन अध्ययन निष्ठ पाठ।

② द्रुत-वाचनोद्दिष्ट पाठ

* गहन अध्ययन निष्ठ पाठ

गहन-अध्ययन निष्ठ पाठों में सूक्ष्म अध्ययन की आवश्यकता पड़ती है। उनका मुख्य उद्देश्य भाषा-शिक्षण होता है। इन पाठों में एक-एक शब्द, वाक्यांश, मुहावरे, लोकोक्ति आदि को समझना पड़ता है। शब्दों के अर्थ समझने के लिए व्युत्पत्ति, वाक्य-प्रयोग, शब्द खण्ड, विलोम शब्द, पर्यायवाची उद्धरण, व्याख्या, घटना आदि का आश्रय लिया जाता है।

गहन अध्ययननिष्ठ पाठों की विशद् व्याख्या की जाती है। इसके विचारों का विश्लेषण किया जाता है ताकि छात्र उक्त विचारों का हृदयंगम कर सकें। पुनरावृत्ति प्रश्नों की सहायता से परीक्षा ली जाती है कि कक्षा के छात्रों ने किस सीमा तक पाठगत विचारों को आत्मसात किया है। गद्य अध्ययननिष्ठ पाठों में विचारात्मक निबन्धों की बहुलता होती है।

* द्रुत-वाचनोद्दिष्ट पाठ —

सरल भाषा में ऐसे पाठों को द्रुत पाठ कहते हैं। ये पाठ सरल होते है। इनकी शब्दावली छात्रों के लिए परिचित होती है, इसलिए इनमें शब्द व्याख्या पर कम बल दिया जाता है। इनका अध्ययन शीघ्रता से होता है क्योंकि विचारों की गहनता इनमें नहीं होती। शीघ्र पठन और मौन पठन उपयोगी होता

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

है। मौन पठन भी कुछ द्रुत पठनों में अति शीघ्रता से किया जाता है। इन पाठों में विषय वस्तु क्या है ? केवल इतनी सी जानकारी ही अपेक्षित होती है। विषय-बोध मुख्य तथा भाषा बोध गौण होता है।

दोनो प्रकार के पाठों के शिक्षण उद्देश्यों में भी भिन्नता होती है। यह भिन्नता उनके प्रयोजन की भिन्नता के कारण पैदा हो जाती है।

* गहनअध्ययन तथा द्रुत-वाचनदृष्टि पाठों के प्राप्त उद्देश्य

गहनअध्ययननिष्ठ के उद्देश्य	द्रुत वाचनोद्दृष्टि पाठ के उद्देश्य
1. छात्रों के शब्द भण्डार में वृद्धि।	1. छात्रों के वाचन में गति उत्पन्न करना
2. छात्रों के सूक्ति भण्डार में वृद्धि।	2. छात्रों को मौन वाचन में अभ्यस्त करना।
3. कहावतों, मुहावरों के प्रयोग की क्षमता का विकास।	3. विषय-वस्तु का बोध कराना।
4. व्याकरण सम्मत भाषा के प्रयोग की शिक्षा।	4. सहायक पुस्तकों को पढ़ने की रुचि जाग्रत करना।
5. गद्य की विविध विधाओं, शैलियों का परिचय देना।	5. स्वतन्त्र अध्ययन के लिए प्रोत्साहन देना।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner